

पाँचवाँ अध्याय

मार्कण्डेय के कथासाहित्य का  
संरचना पक्ष

## पाँचवाँ अध्याय

### मार्कण्डेय के कथासाहित्य का संरचना पक्ष

साहित्य की रचना विधि उसके कथ्य और शिल्प से सम्बन्ध रखती है। एक रचनाकार का प्रयास यह रहता है कि वह अपनी रचना में इन तत्वों के प्रति सजग रहे। साहित्यकार अपने मनोभावों और अनुभूतियों को भाषा के जरिए प्रस्तुत करता है। बाहरी रूप योजना जितना ही विचारानुकूल होगा उतना ही साहित्य उत्कृष्ट बन जाता है। बाहरी रूप योजना यानी शिल्प जिसका मतलब होता है साहित्य रचने का तरीका या ढंग - “साहित्यकार रूपयोजना के जिन तरीकों एवं ढंग से अपने मनोभावों को रूपायित करता है, वे ही उसकी शिल्पविधि के नाम से ख्याति प्राप्त कर लेते हैं।”<sup>1</sup> डॉ नगेन्द्र के मुताबिक शिल्प का मतलब - “किसी भी कला में क्रियाकल्प का तात्पर्य कलात्मक निष्पादन की विधि से होता है, अर्थात् किसी कृति के विविध अवयवों और ब्योरों को गुंफित करने की पद्धति से है।”<sup>2</sup>

साहित्यकार का मनोभाव साहित्य के बाहरी रूप यानी शिल्प द्वारा ही दूसरों तक पहुँचता है। इसलिए साहित्य में शिल्प की भूमिका अहम एवं विशाल होती है - “साहित्यकार अपनी रचना के सृजन की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर इसे कलात्मक रूप प्रदान करने की अन्तिम अवस्था तक जिन नाना प्रकार की विधियों,

- 
1. ओम शुक्ल - हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास - पृ. 21
  2. संपा. डॉ. नगेन्द्र - मानविकी पारिभाषिक कोश - पृ. 931

रीतियों एवं प्रक्रियाओं को काम में लाता है, वह सभी विधियाँ और रीतियाँ शिल्पविधि के नाम से पुकारी जाती हैं। इस दृष्टि से देखा जाय तो शिल्पविधि का स्वरूप एवं परिधि संकुचित अथवा एकांगी न होकर, बहुत विशाल है।”<sup>1</sup>

प्रत्येक साहित्यकार अभिव्यक्ति की सफलता के लिए शिल्प को ताज़ा बनाने का प्रयत्न करता है। शिल्प में नवीनता लाने का प्रयत्न जारी रखता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में उभर आयी आँचलिक कथानकों के साथ उसके शिल्प में भी प्रभावशाली ताज़गी आ गई है और उसमें ग्रामांचलिक जीवन की अभिव्यक्ति सफल हुई है।

आँचलिक कथाकार के नाते मार्कण्डेय के कथासाहित्य में शिल्पगत नवीनता ज़रूर पायी जाती है। हॉलांकि विचारधारा को लेकर आगे बढ़ने के कारण, मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में कला शिल्प को ज़्यादा महत्व न देकर उसे वस्तु की अभिव्यक्ति के प्रभावशाली माध्यम के रूप में ही अपनाया है। उनके मुताबिक “कला और शिल्प की बारीकियों में डूबे रहना कलाकार के शैशव का सबसे बड़ा मोह है और हम सभी इस लोभ के बीच से गुजरते हैं। कुछ लोग जीवन भर इसी लोभ में तडपते रह जाते हैं, कुछ आगे बढ़ जाते हैं।”<sup>2</sup> उन्होंने कलात्मक और शिल्पगत बारीकियों को बचकाना मानते हुए उससे दूर रहने का प्रयास किया है। मार्कण्डेय के कहानी शिल्प के संबद्ध में डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद का मन्तव्य है कि -

- 
1. ओम शुक्ल - हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास - पृ. 27
  2. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ 'भूदान की भूमिका' - पृ. 247

“कला अथवा शिल्प की बारीकियों में भटकने के बजाय उन्होंने अपने कथा साहित्य को विचारों, अनुभवों तथा सामाजिक यथार्थ के चित्रणों से सम्पन्न बनाया है। कला अथवा शिल्प के प्रति यदि कहीं उनका लगाव रहा भी है तो इसलिए रहा है कि उनकी कृतियाँ उनकी अनुभूति तथा यथार्थ विचारों को सहेजते हुए भी कलात्मक सृष्टि बनी रह सके”<sup>1</sup> मार्कण्डेय की रचनाओं का शिल्प सहज एवं सरल है। तथा आँचलिक जीवन की अभिव्यक्ति के लिए सक्षम भी है।

### 5.1 देश-काल-वातावरण

आँचलिक साहित्य के शिल्प में घटना, चरित्र, कथोपकथन और कथानक के विकास के मुकाबले स्थान और काल के द्वन्द्वात्मक संबंध उभारनेवाले साधन ज़्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। आँचलिक साहित्यकार स्थान के घनीभूत चित्रण के जरिए आँचलिक जीवन की असलियतों को उभारता है। काल और स्थान का विधान साहित्यिक यथार्थ को ज़्यादा जीवन्त बनाता है। देश-काल में आचार-विचार, रीति-नीति, चाल-ढाल, रहन-सहन, प्राकृतिक पृष्ठभूमि आदि सम्मिलित हैं। साहित्य में देश और काल का विवेचन करते हुए डॉ. गुलाबराय ने व्यक्त किया है - “देश काल के चित्रण में सदा इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रहे, स्वयं साध्य न बन जाये। जहाँ देश-काल का वर्णन अनुपात से बढ़ जाता है वहाँ उससे जी ऊबने लगता है, लोग जल्दी-जल्दी पन्ने

---

1. डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद - मार्कण्डेय का रचना संसार - पृ. 139

पलटकर कथा-सूत्र को ढूँढने लग जाते हैं। देश-काल का वर्णन कथानक को स्पष्टता देने के लिए होना चाहिए न कि उसकी गति में बाधा डालने के लिए। ...देश-काल वातावरण का बाहरी रूप है। वातावरण मानसिक भी हो सकता है। आदमी जिस प्रकार के समाज में रहता है वैसा ही वह काम भी करने लग जाता है। प्राकृतिक चित्रण भी उद्दीपन रूप से पात्रों की मानसिक स्थिति या मूड (mood) को निश्चित करने में सहायक होते हैं। प्रकृति और पात्रों की मानसिक स्थिति का सामंजस्य पाठक पर अच्छा प्रभाव डालता है और उपन्यास में काव्यत्व भी ले आता है, जैसे किसी के मरते समय दीपक का बुझ जाना, सूर्य का अस्त हो जाना अथवा घड़ी का बंद हो जाना वातावरण में अनुकूलता उत्पन्न कर शब्दों को एक विशेष शक्ति प्रदान कर देता है।”<sup>1</sup> देश-काल के चित्रण में संयम रखना भी ज़रूरी है।

मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में परिवेश के बहुआयामी स्वरूप को प्रामाणिकता के साथ चित्रित करके सजीव बना दिया है। स्वातंत्र्योत्तर उत्तरप्रदेश के पूर्वांचलिक परिवेश ने उनके कथासाहित्य को जीवन्त बनाया है। परिवेश के प्रति मार्कण्डेय के रागात्मक लगाव को मधुरेश ने यों शब्दबद्ध किया है - “मार्कण्डेय परिवेश के प्रति रोमांटिक लगाव से प्रायः ही अपने को मुक्त रख पाने में सफल होते हैं। उनकी कहानियों में परिवेश के लिए परिवेश का अंकन नहीं के बराबर है। परिवेश के प्रति रागात्मक संपृक्ति का अभाव उनमें नहीं है, लेकिन उनकी कहानियों का परिवेश अपने में एक स्वतंत्र इकाई न होकर उनके पात्रों की सोच, मानसिकता

---

1. डॉ. गुलाबराय - काव्य के रूप - पृ. 187

और सरोकारों के लिए कई ज़रूरी पृष्ठभूमि का काम करता है। यही कारण है कि इन कहानियों में परिवेश की सारी वास्तविकता के बावजूद महत्व परिवेश का उतना नहीं है जितना कि उस परिवेश की पृष्ठभूमि में अंकित पात्रों का है।”<sup>1</sup>

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सरकार ने गाँव के उद्धार तथा अमीर गरीब के फासले को कम करने के लिए ज़मींदारी उन्मूलन का कानून लागू किया। कानून के लागू होने के पहले ही ज़मींदारों ने संपत्ति को जमा करने का नया रास्ता खोज लिया। ‘अग्निबीज’ उपन्यास में ऐसी परिस्थितियों से उत्पन्न होनेवाली प्रतिक्रियाओं तथा विरोधाभासों को प्रस्तुत किया गया है - “सरकार ने जब जमींदारी उन्मूलन का कानून बनाया तो उसे लागू होने के पहले ही अलाभकारी अथवा साधारण लाभ देने वाली ज़मीन के बदले लाखों रुपये ज़मींदारों ने खड़े कर लिये थे, जो बाद में व्यापार में लग गये अथवा बैंकों में सूद कमाने के लिए जमा कर दिये गये। उनकी अपनी जोतों पर कोई पाबन्दी नहीं थी, इसलिए उन्होंने सर्वोत्तम जमीन को निजी फार्मों के रूप में बदल लिया था। मुआवजा उन्हें ऊपर से मिला था। इस कानून ने ज़मींदारों का नज़रिया बदलकर उन्हें बेहद लाभ पहुँचाया था। शोषण की नई विधियाँ और नये हथियार उनके हाथ में आ गये थे। उन्होंने देश की राजनीति में भी अपनी एक भूमिका बना ली।”<sup>2</sup> इस पृष्ठभूमि से लेखक को उपन्यास में ज़मींदारी उन्मूलन से उत्पन्न प्रतिक्रियाओं के अंकन के लिए ठोस आधार मिल गया है।

---

1. संपा. प्रकाश त्रिपाठी - मार्कण्डेय : परम्परा और विकास - पृ. 107

2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 25

‘हलयोग’ स्वतंत्रता के समय के ग्रामीण लोगों की जातिगत मानसिकता पर लिखी गई कहानी है। कहानी का चौथीराम एक चमार है। वह तमाम दिक्कतों को पार करके अध्यापक बनता है। गाँव के सवर्णों की रूढ़ मानसिकता पर चौथीराम के अध्यापक होना गहरा आघात पहुँचाया है। इस कहानी के शुरुआत में मार्कण्डेय ने जिस तरह ग्रामीणों के जातिगत मानसिकता का अंकन किया है, वह अपने को गतिशील बनाने में सक्रिय योगदान दिया है। स्वातंत्र्योत्तर समय के ग्रामीण धार्मिक परिवेश जातिगत ऊँच-नीच भावना से ग्रस्त था - “उन दिनों ब्राह्मण अध्यापकों को पण्डितजी, ठाकुरों को बाबू साहब और इतर जातियों को मुन्शीजी कहे जाने का चलन था। ...उस समय किसी चमार का अध्यापक बन जाना एक अनहोनी बात थी। ब्राह्मण ठाकुरों का हल चलाना, मरे हुए ढोर-डाँगर गाँव से उठाना, पूरे परिवार समेत मालिक के घर काम करना ही उनकी नियति थी।”<sup>1</sup> इसके आगे एक सुखी जिंदगी निम्नवर्ग को मिलना उच्च वर्ग के लिए बरदाश्त नहीं है।

‘दौने की पत्तियाँ’ नामक कहानी में मार्कण्डेय ने प्रकृति के मनोरम दृश्य के ज़रिए ग्रामीण परिवेश को जीवंतता प्रदान की है - “एक बीघे पतले, लम्बे नहरी खेत के एक सिरे पर भोला की यह सृष्टि गाँव की दुलहिन के नाम से पुकारी जाती है। ...एक ओर साग-भाजी का कोइरार और दूसरी ओर एक झोपड़ी। उसके आगे एक छोटा-सा आँगन। आँगन के चारों ओर एक चौड़ी मेड़, जिसकी नाली में मर्सा, मकोय, तुलसी और दौना से लेकर, वैजंती, रातरानी और गुलदावरी के पौधे

---

1. मार्कण्डेय - हलयोग - पृ. 13

लहलहाते रहते हैं।”<sup>1</sup> ‘अग्निबीज’ में मार्कण्डेय ने वातावरण के साथ-रामपुर अंचल के स्थानीय रंगत का भी वर्णन किया है। रामपुरवासियों के जिंदगी में वहाँ के बजमा पोखरी का स्थान अहम है। बच्चे उस पोखरी को पार करके ही स्कूल जाते हैं। बरसात के दिन पोखरी का पानी चढ़ जाता है। बच्चे पानी में कूद पड़ते हैं - “बरसात शुरू होती और... पोखरी धीरे-धीरे भरती। फिर दूसरे तालों का पानी बढ़कर उसमें मिल जाता और तेजी से चढ़ता हुआ पानी रामपुर और सेतपुर के बीच इस पतले निचले भाग में भर जाता। फिर क्या था, लड़कों के मजे के दिन आ जाते। वे मनमाना नहाते और कपड़ा भीग जाने का बहाना लेकर वापस घर लौट जाते। इन दिनों स्कूल की हाज़िरी बहुत कम हो जाती क्योंकि ज्यादातर लड़के रामपुर से ही आते थे।”<sup>2</sup> मार्कण्डेय ने स्थानीय रंगत के चित्रण में पर्याप्त संयम निभाया है। कथा सूत्र को प्रभावशाली बनाने के लिए ही उन्होंने स्थानीय रंगत का इस्तेमाल किया है। कोरा वर्णन से उन्होंने अपने को बचाया है।

प्राकृतिक वातावरण व्यक्ति के मानसिकता पर गहरा प्रभाव डालता है। दरअसल बहुत सारे रूढ़ी और अंधविश्वासों में जकड़े ग्रामीणों के मन में प्राकृतिक संकेत का प्रभाव ज़्यादा गहरा होते हैं। ‘नीम की टहनी’ में लेखक ने वातावरण के सृजन द्वारा आगे होनेवाले किसी घटना विशेष की भयंकरता को दिखाने का प्रयास किया है - “सूरज डूबते ही, सारा गाँव डाइनों के काले लहंगे में उलझ कर बेहोश

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 199

2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 16



हो जाता है। हवा का झोंका अपनी खूँखार अँगुलियों से, खपरैल के घरों तथा फूस की झोंपडियों को रह-रह कर छूता है, और वे दूबक कर, एक भयानक खामोशी में डूब जाती हैं। सिवाँन में सियारों की हुआँ ऽ हुआँ ऽऽ... और गाँव में कुत्तों की भों ऽ भों ऽऽ... लोग कानों में अँगुलियाँ डाल लेते। कितने अपसकुन साथ-साथ हो रहे हैं।”<sup>1</sup>

मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में समूचे ग्रामीण परिवेश को उसकी समग्रता के साथ उकेरा है तथा इस प्रयास में वे काफी हद तक सफल भी हुए हैं।

## 5.2 संवाद

लेखक संवाद के जरिए कथावस्तु को गतिशील बनाता है। यह पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालने के लिए भी अत्यन्त सहायक होता है। संवाद या कथोपकथन का समावेश कथा साहित्य में स्वाभाविक रूप से और ज़रूरत के अनुसार होना चाहिए। उद्देश्य रहित संवाद फीके और अनावश्यक प्रतीत होते हैं। प्रेमचंद के मुताबिक संवाद के गठन में कुछ बातों पर ध्यान रखना लाजिमी है कि - “उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना कम लिखा जाए उतना अच्छा है। इस संबन्ध में इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि वार्तालाप केवल रस्म ही नहीं होना चाहिए किसी भी चरित्र के मुँह से निकले हुए वाक्य को उसके मनोभाव एवं चरित्र पर कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक,

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 17

परिस्थितियों के अनुकूल और सूक्ष्म होना आवश्यक है।”<sup>1</sup> संवाद सहज, सार्थक वातावरण एवं पात्रों के अनुकूल होने से ही कथावस्तु को गतिशील बनाने के लिए सक्षम बनता है।

मार्कण्डेय ने अपने कथासाहित्य को ग्रामांचलिक परिवेश से रूपायित किया है। इसके नाते उन्होंने संवाद को स्थानीय बोली तथा गँवाई पात्र की मानसिक एवं भौतिक विचार के अनुकूल प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यानी परिस्थितियों एवं पात्रों की अनुकूलता उनके संवाद की सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने संवाद को सजीव एवं रोचकता के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

मार्कण्डेय ने छोटे-छोटे संवादों से कथानक को ज्यादा प्रभावशाली बनाने की कोशिश की है। उनके छोटे संवाद बहुत सहज और भावुक हैं। इस तथ्य का स्पष्टीकरण मार्कण्डेय की ‘रामलाल’ और ‘नीम की टहनी’ नामक कहानी के जरिए करूँगी।

‘रामलाल’ कहानी का रामलाल और जग्गी का कथोपकथन-

“जग्गी ने कहा, “काहे उदास हो बाबू।” एक बार रामलाल के जी में आया, वह जवाब न दें और आगे बढ़ जाये, पर जग्गी उसके पीछे पड़ गया।

“राम कसम बाबू, जो न बताओ।”

---

1. प्रेमचन्द - कुछ विचार (भाग 1) - पृ. 55

“बता के क्या करूँगा जग्गी। उसकी दवा तुम्हारे पास नहीं है।”

“पहिले तुम बताओ भी तो।” जग्गी ने मूँह फैलाकर याचना के स्वर में कहा। रामलाल भावुक हो चला था। उसने बड़े दर्दभरे स्वर में कहा-

“जग्गी, दुनिया में दुख की भी कोई दवा है?”

“दुख, अरे बाबू, यह तो साला रोज ही हम लोगों के सिर पर चढ़ा रहता है।”

“फिर कैसे जीते हो जग्गी?”

“यही बाबू, छान लिया एक अब्दा, फिर क्या है?” जग्गी ने गंभीरतापूर्वक कहा।

रामलाल की आँखें फैल गई और वह कह उठा-

“दुख उससे कम हो जाता है, जग्गी?”

“कम कहते हो बाबू, उड़ जाता है, उड़।”<sup>1</sup>

‘नीम की टहनी’ का कुमार और पियरी का प्रेमपूर्ण संवाद में मार्कण्डेय बहुत सरल तथा सहज रूप से छोटे संवादों का प्रयोग किया है-

- “देख री पियरी, अब मैं यहाँ नहीं आया करूँगा।

- नहीं आयेगा, सच।

- सच!

- तो ले, मैं टहनी तोड़ती हूँ।

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 93-94

- बाप रे ! तुम्हें मेरी कसम।

और दौड़कर कुमार पियरी के दोनों कान पकड़कर, इकझोर देता,

- पगली तु मर जायेगी तो मेरा क्या होगा? अच्छा मैं भी एक टहनी तोड़ लूँगा।

- इससे कुछ नहीं होगा कुमार ! जो पहले तोड़ता है वही मरता।”<sup>1</sup>

‘आदर्श कुक्कुट गृह’ नामक कहानी में मार्कण्डेय ने ग्रामीण बोल-चाल के ढंग को स्थानीय शब्दों के जरिए बखूबी से जाहिर किया है। कहानी का बसावन और रमजान गाँव में आनेवाली आदर्श कुक्कुट योजना के बारे में बात कर रहे हैं-

“इतना की तुम्हारी समझ में नहीं आता तो तुम रह चुके इस देश में। अरे भइया, पइसा ही सब कुछ नहीं है। देखो जुम्मन चार मुर्गी-मुर्गे का वादा करके आदर्श कुक्कुट-गृह का मेम्बर बन गया।”

“बस यही तो हम जानना चाहते हैं भयवा कि आदरस कुक्कुर-गिरिह का बला है।”

“कुक्कुर नहीं कुक्कुट... कुक्कुट। कुक्कुट माने होता है मुर्गा। यह हमारे देश की नयी भाषा है - हिन्दी, हम सब की राष्ट्र-भाषा।”

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 18-19

हमको तो कुछ समझाता ही नहीं भइया, यह कुक्कुर-मुक्कुर, मुदा बात उस नये साहब की सोहाती है। नियायिन भी कहती थीं कि जमाना फेर खाय गया है। जब हम सब की पूँछ-पछोर होने लगी, तो जानो कुछ हो कर ही रहेगा।”<sup>1</sup> यहाँ पर मार्कण्डेय ने पात्रानुकूल संवाद का सफल प्रयोग किया है। इस संवाद में गंवाईपन की स्पष्ट झलक है।

मंगी ‘कल्याणमन’ कहानी का एक सशक्त पात्र है। वह जीवन के विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करती है। मार्कण्डेय ने उसके कथन में उस विद्रोहात्मकता को बनाये रखने की कोशिश की है-

“अँखिया त फूट गयी हैं सुरजियन की कि यह अन्हेर भी नहीं देखते। खेती चमरु करेगा, परताल ठाकुर के नाम से होगी। बीच में पटवारी इधर से भी खाएगा, उधर से भी खाएगा। अब तो बेभूँय का किसान, खाद हो गया है, खाद। बस वह खेत बनाता है।”<sup>2</sup>

मार्कण्डेय कथोपकथन के जरिए अपने विचार को भी प्रकट करना चाहता है। ऐसे में संवाद का स्वरूप विचारात्मक अधिक हो जाता है तथा संवाद में अनावश्यक विस्तार भी पाया जाता है। इस तरह के प्रयोग से कहीं-कहीं मार्कण्डेय के संवाद कुछ फीका पड़ जाता है। ‘अग्निबीज’ उपन्यास की श्यामा के संवाद में इस बात को देखा जा सकता है-

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 263

2. वही - पृ. 192

- “हिरनी, छबिया, नन्हकी और मैना आज के सत्य हैं। कन्या के घर में जनमते ही कुल में खोट आती है। खुशी की जगह रंज मनाया जाता है। मैंने खुद देखा है कि गाती ब्राह्मणियाँ सिर झुका कर उठ जाती हैं। बूढ़ी दादियों के मूँह से कवर नीचे गिर जाता है। स्त्री हीन जात है, उसे परदे में रखना ही ठीक है। पढ़ कर करेगी क्या? घरों में दो तरह का खाना होता है। रुखा-सुखा खा कर ही पत्नी पतिव्रता बनी रह सकती है। जिभचटोरी तो कुलकलंकिनी होती है। होश संभालते ही वह घर आँगन ताकने लगती है। चुल्हे-चौके से आगे दुनिया में उसके लिए कहीं कुछ नहीं। लड़की को दूध कौन देता है? दूध से वह जल्दी बढ कर मोटी हो जायेगी। रेड़ की जात है लड़की। रोग-दोख होने से वह मरती भी नहीं। सब ठीक हो जायेगा। लड़की राकस की जात है और बारह बरस बीता नहीं कि परिवार के सीने पर पत्थर की तरह वह भार बन जाती है। माँ की आँखों में आँसुओं से माडा पडने लगता है। बाप दर-दर की ठोकर खाता है। दहेज के लिए कर्ज लेता है। जमीन बेचता है। कोई खाली हाथ लड़की को घर में लेगा भी क्यों? क्या होती है लड़की? एक नहीं तो दूसरी मिलेगी। जिसके पास धन दौलत है, उसके लड़के के लिए लड़की की कहाँ कमी है!....।”<sup>1</sup> उपन्यास में इसका अलग से अहमियत होता है हँलांकि संवाद का विस्तार कुछ अरोचक लगता ज़रूर है यद्यपि यह क्रूर हकीकत है।

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में विभिन्न वर्गों से जुडे अनेक पात्र पाये जाते हैं। उन्होंने संवाद के जरिए इन पात्रों को यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत किया है। उनका

---

1. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 108

संवाद परिस्थिति, वातावरण तथा पात्रों के अनुकूल रहा है। मार्कण्डेय के कथासाहित्य के संवाद में पात्र के चरित्र को स्पष्ट तथा कथावस्तु को गतिशील रखने की क्षमता है।

### 5.3 मार्कण्डेय के कथा साहित्य की भाषा

भाषा मनुष्य के भाव और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त एवं सफल माध्यम है। साहित्यकार के मनोभाव एवं अनुभूति जब भाषा के साधनों के जरिए प्रकट होती हैं तब वह साहित्य बन जाता है। वातावरण और पात्रानुकूल भाषा से साहित्य की स्वाभाविकता बढ़ जाती है। सामान्यतः साहित्य में भाषा के दो रूप दिखाई देते हैं। एक लेखक का वर्णन विश्लेषण की भाषा जो उनकी ज्यादातर रचनाओं में एक जैसी रहती है और दूसरा पात्रों की बातचीत में प्रयुक्त भाषा जो प्रत्येक पात्र के अनुरूप होती है। कथा साहित्य की भाषा के संदर्भ डॉ. प्रतापनारायण टंडन का मन्तव्य समीचीन है - “कहानी की भाषा का दुरूह होना उसकी भावात्मक प्रवाहशीलता में बाधा उत्पन्न कर देता है। सरल, सहज, मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा कहानी को व्यवहारिक विश्वसनीयता प्रदान करती है। क्लिष्ट भाषा न केवल कहानी को नीरस बना देती है, बल्कि उससे कहानी की प्रभावात्मकता भी नष्ट हो जाती है। निरर्थक शब्दयोजना, अकलात्मक शब्दाडम्बर, दुरूह वाक्य-जाल आदि भी कहानी को भाषा तत्व की दृष्टि से हीन बना देता है।”<sup>1</sup>

मार्कण्डेय के कथासाहित्य की भाषिक संरचना में स्थानीय या आंचलिक शब्दों एवं ध्वनियों की प्रधानता है। मार्कण्डेय गाँव में पले-बड़े होने के नाते उसमें

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिन्दी कहानी कला - पृ. 361

ऐसी भाषा की गहरी और व्यापक समझ है। अतः उनकी भाषा में आँचलिकता का पुट सफलता से हुई है। यह उनके कथा साहित्य को ताजगी और जीवंतता प्रदान करते हैं - “गाँव में बोली जानेवाली भाषा का अत्यंत स्वाभाविक एवं आकर्षक रूप उनके कथा-साहित्य में दिखाई देता है। उन्होंने रंगत, बोलचाल, मुहावरे एवं कथावर्तों को बड़ी सफलता के साथ प्रयोग किया कि वह कहानी की भाषा न होकर जीवंत ग्रामीणों की भाषा लगती है।”<sup>1</sup> उन्होंने अपने कथा साहित्य में आँचलिक जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावोत्पादक भाषा से आकर्षक बनाया है।

### 5.3.1 शब्दयोजना

भाषा को सार्थक संप्रेषणीयता देने के लिए शब्दों के चयन में ध्यान देना ज़रूरी होता है। भाषा में शब्दों के तत्सम, तद्भव, विदेशी, देशी या क्षेत्रीय आदि भेद देखने को मिलते हैं। मार्कण्डेय की कहानियों में आँचलिक शब्दों की प्रधानता है। आँचलिक साहित्य की भाषा में स्थानीय या तद्भव शब्दों का प्रयोग सर्जन की ज़रूरत होती है, - “स्थानीय रंगत से ही किसी अंचल का स्वरूप उभरता है, इस स्थानीय रंगत के कारण एक अंचल दूसरे अंचल से भिन्न और अलग दिखायी देता है। अंचल विशेष की स्थानीय रंगत को उभारने के लिए आँचलिक उपन्यासकार लोकतत्वों की विपुलता के साथ प्रयोग करता है। उनमें लोभभाषा बोलियों, उपबोलियों का स्थान महत्वपूर्ण होते हैं।”<sup>2</sup> धर्मवीर भारती ने मार्कण्डेय की स्थानीय

---

1. कृष्णा अग्निहोत्री - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी - पृ. 233

2. नगीना जैन - आँचलिक और हिन्दी उपन्यास - पृ. 46



या तद्भव बहुल भाषा को प्रेमचंद से ज्यादा कलात्मक बताया है - “मैं साहस से कहना चाहूँगा कि प्रेमचंद की तद्भव बहुल भाषा से कहीं ज्यादा सुघड और कलात्मक है।”<sup>1</sup> मार्कण्डेय ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्थानीय शब्दों के प्रयोग से वहाँ की आँचलिक भाषा को बुलंद किया है।

उनके कथा-साहित्य में दृष्टव्य शब्दों को निम्नलिखित उपशीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं।

### 5.3.1.1 ग्रामीण देशी शब्द

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में आँचलिक शब्दों की भरमार हैं। जैसे बखरी गाँज, सिघाड़ा, भूँय, पटवारी, बोरसी, भूसा, चुनरी, महारारू, सहुअइनिया, गगरा, खरहरा, चक, करेज, जुन, घरौंदा, सुरजियन, बिस्सा, देहिया, भौजी, बहिन, पियरी, पँवारा, मडइया, पोखरी, गमछा, पोटली, मटियाई, जोखन, बिटिया, भभर, भोर, बजडी, मतारी, धुगरी, चुरइन, रुपहला, भाखनी, आजी, उसर, पन्नर, कतवारू, लगहनी आदि शब्दों के प्रयोग से मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में आँचलिकता का गहरा रंग भर दिया है। ‘कल्यानमन’ कहानी की बूढ़ी मंगी के कथन में आँचलिकता का पुट पर्याप्त रूप से है, जो उसे वातावरण का अनुकूल बनाता है - “आँखिया त फूट गयी है सुरजियन की कि यह अन्हेर भी नहीं देखते। खेती चमारू करेगा, परताल ठाकुर के नाम से होगी। बीच में पटवारी इधर से भी

---

1. संपा. प्रकाश त्रिपाठी - मार्कण्डेय : परम्परा और विकास - पृ. 208

खाएगा, उधर से भी खाएगा। अब तो भेभूँय का किसान, खाद हो गया है, खाद।”<sup>1</sup>  
 ‘अग्निबीज’ में दुलरा आजी और चंदाबहु के संवाद में मार्कण्डेय ने पूर्वाचलों की स्थानीय बोली को बखूबी से उतारा है - “दुलरे ने कहा, ...मुदा मैं समवा को का कहूँ। बियाह-दान की उमिर हुई। लड़की की जात लाज-हया सीखती है। सीना-पुरना करती है। लेकिन वह तो जब देखो बस कापी-किताब लिये, तखत पर बइठी, बाकर वाले से बतियाती रहती है। साधो उसका हाथ पियर कराय चुके, बहू रानी। कुछ सोचो तुम लोग। आखिर में पडेगा तुम्हारे ही तुम्हारा सिर।”<sup>2</sup>

### 5.3.1.2 तत्सम शब्द

उन शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है जो भाषा में संस्कृत के शुद्ध रूप में प्रचलित है। मार्कण्डेय के कथा साहित्य में तत्सम शब्दों का प्रयोग खासकर उनके द्वारा कथावस्तु का विश्लेषण-विवेचन में तथा शिक्षित लोगों के संवाद में हुआ है। इन दोनों संदर्भ में उन्होंने तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया - जैसे प्रणय, घृणा, व्यतीत, विद्रोह, भ्रम, माता, पिता संस्कार, भ्रष्ट, स्वयंसेवक, स्मृति, शिक्षा, ईर्ष्या, पौरुष, दीक्षा, प्रलय, ममता, प्रतितामह, वार्थक्य, प्रवाह, जनता, कामुकता, सौंदर्य, संयोग, वृष्टि, तिमिर, सुकुमार, प्रतिवाद। मार्कण्डेय की ‘वाँसवी की माँ’ नामक कहानी में तत्सम शब्द से लदी एक संवाद देखें - “स्त्री इस गंगा की मुक्त धारा से कम नहीं है। ‘फिर एक-एक कुछ उदासीन हो कर, ‘नहीं, नहीं स्त्री इस

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 192

2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 122

नीचे बहते हुए गंदे नाले के पानी से ज्यादा नहीं है। उसका मन, उसका शरीर गुलामी की सांस्कारिक जंजीर में कस कर, फँस गये हैं, और वह जी कर भी नहीं जीती, उसकी सेवा, श्रृंगार, शीलता सब झूठे दंभ हैं; जिनकी छाया में वह धुल-धुल कर मर रहा है, और विवाह...?’ उसके चेहरे पर एक विकृति की रेखा आती है, जिसमें कई चीजें साफ-साफ लिखी मिलती हैं।”<sup>1</sup>

मार्कण्डेय के ग्रामीण अशिक्षित पात्रों के मुँह से जब तत्सम शब्द का प्रयोग होता है, तब उसमें बदलाव ज़रूर दिखाई पड़ता है, जैसे विवाह का ब्याह, देह को देहिया, द्वार को दुवार, धर्म को धरम तथा अनर्थ को अनरथ। इस प्रकार का प्रयोग भी मार्कण्डेय की भाषागत खासियत है।

### 5.3.1.3 विदेशी शब्द

अरबी-फारसी एवं उर्दू शब्दों का प्रयोग भी मार्कण्डेय के कथा साहित्य में देख सकते हैं। जैसे अरबी शब्द : शराब, हँसमुख, किशती, मुकदमा, रुख, हवेली, इश्तिहार, मनहूस, बिखर, ज़माना, खिसकना, मुनाफा, विदा, नुकसान, खबर, तकलीफ, फिक्र, रस्म, बिकना, इंतजाम, इंतजार, इलाज, मंजूरी, रुदन।

फारसी शब्द : नाजायज़, आवाज़, चारपाई, मज़दूर, तरकारी, दरवाज़ा, होशियार, नाराज़, मुँह, जायदाद, रुख, ज़हर, जिम्मेदारी, कारिन्दा, काश्त, जबान, तकिया, खामोश, खर्च, दहलीज, राह, निशानी, दुश्मन।

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 11

उर्दू शब्द : तावीज़, दुआ, अब्बा, अखबार, अजीब, अगर, करीब। मार्कण्डेय ने 'अग्निबीज' उपन्यास के मुस्लीम पात्रों के संवाद में सहजता लाने के लिए उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है। बाकर अपने बेटा मुराद से कहते हैं कि "यह क्या किया तुमने? भूरे पार के पीर की तावीज़ है यह। इसे देह से हटाना असगुन है मुराद। इसमें बड़ी दुआएँ हैं। मुराद फिस से हँसकर बोला, "दुआओं से कुछ नहीं होता, अब्बा।"<sup>1</sup>

अंग्रेजी शब्द : कैम्प, इन्जनीयर, प्रेफेसर, स्कूल, मोटर, पुलिस, ट्रक, होस्टल, मिनिस्टर, कमेटी, वॉट, रजिस्ट्रार, चार्ट, थर्मोमीटर, इंटर, कंक्रीट, असेम्बली, फंड, डिस्ट्रिक्ट, मजिस्ट्रेट, कैरियर, ड्राइवर, करेन्ट, मेम्बर, युनिवर्सिटी, कॉलेज, लेक्चर, पोलिंग, पैन्ट, कोट।

#### 5.4 यौगिक शब्द

मार्कण्डेय ने कहानियों में बीच-बीच यौगिक शब्दों के प्रयोग से ग्रामीण भाषा में एक प्रकार की सहजता और प्रवाह लाने का प्रयास किया है। जैसे - "काकी कहते-कहते खाना ठीक करने के लिए उठ गयी।"<sup>2</sup> "आँगन में पानी भर गया था और चौखट के ऊपर से धीरे-धीरे घर में आने लगा था।"<sup>3</sup> "भला बची है एक बिस्सा भूँय किसी मजूर-धतूर के पास?"<sup>4</sup> "आँसुओं की धारा उसकी आँखों

- 
1. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 31
  2. वही - पृ. 109
  3. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 108
  4. वही - पृ. 192

से बह निकली रिस-रिस कर, हिचक-हिचक कर, वह रोती रही।”<sup>1</sup> इस तरह बहुत सारे यौगिक शब्दों का प्रयोग उसके कथा साहित्य में हुई है - तनी-तनी, अलग-अलग, नन्हें-नन्हें, बडी-बडी, कुट-कुट, जात-कुजात, भीड-भाड़, कमाई-धमाई, लुढकती-पुढ़कती, टूटी-फूटी।

### 5.5 ध्वन्यात्मक शब्द

मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में ध्वन्यात्मक शब्दों के जरिए परिवेश को उसकी पूरी सजीवता के साथ उतारने की कोशिश की है। यह उनके कथ्य को ज्यादा जीवंत बना देते हैं। पानी का बहाव - हाऽऽ आऽऽ आँणू... हाऽऽआऽऽ आम्...

कगार का टूट कर गिरना - ऐँऽहाँम्...ऐँऽहाँम्... पेड़ों का टूट कर पानी में गिरना-भरम्-भाँय.... भरम् भाँ... नगाडे की ध्वनी - किडिक्-किड़िक्-गुडुम... किडिक् किड़िक् गुडुम्... किडिक्-किडिक्...

कुत्ते की आवाज़ - झाँव-झाँव-झाँव... भो... भौ...

चिडियों का आवाज - चिक्-किच्... किर्... ..

हवा का बहाव - हरर् - हरर्.... हरर्।

चक्की पीसे जाने की आवाज़ - हुर-हुरर्... हुर हुरर्...

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 193

इस प्रकार के शब्दों में परिवेश को मूर्त कर देने की शक्ति है। साथ ही वह भाषा में लय उत्पन्न करते हैं।

## 5.6 मुहावरे और कहावतें

मुहावरे और कहावतों के प्रयोग से भाषा की शक्ति बढ़ती है, जिससे तत्त्व ज्यादा संप्रेषणीय और रोचक बनता है। ग्रामीण भाषा में मुहावरे और कहावतों का सहज प्रयोग होते हैं। अतः इनके प्रयोगों से आँचलिकता के रंग को उभारा जा सकता है। आदर्श सक्सेना के अनुसार -“ आँचलिकता के हल्के-गहरे रूप शब्दों के लोक प्रचलित रूपों तथा आंचलिक भाषा के शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों के विस्तृत प्रयोग द्वारा प्राप्त किये जाते हैं।”<sup>1</sup> मुहावरे और कहावतों के प्रयोग से मार्कण्डेय की भाषा में आँचलिकता का रंग भर गया है।

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में मुहावरे और कहावतों का कुछ प्रयोग -  
“मुझे काटो तो खून नहीं”<sup>2</sup>

“जैसे सब रंग में भंग हो गया हो।”<sup>3</sup>

“इस तरह लग जाओ कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे”<sup>4</sup>

“हम ईट का जवाब पत्थर से देंगे”<sup>5</sup>

---

1. आदर्श सक्सेना - हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि - पृ. 262

2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 15

3. वही - पृ. 15

4. वही - पृ. 61

5. वही - पृ. 69

“लेकिन यहाँ तो पासा ही पल्ट गया”<sup>1</sup>

“धनिकलाल के हाथ के लाल झंडे और सिर की लाल टोपी ने आग में घी का काम किया”<sup>2</sup>

“सिंची-सिंचाई लहलहाती हुई मिट्टी में फावडे ऐसे धंसते हैं, जैसे सेब में दाँत।”<sup>3</sup>

“दादी उसे फूटी आँखें भी देखना नहीं चाहती थी”<sup>4</sup>

“तुमने घर की ईंट से ईंट बजा दी है।”<sup>5</sup>

## 5.7 भाषा के कलात्मक प्रयोग

साहित्य की भाषा में प्रतीक, बिंब, संकेत और अलंकार आदि के प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य बढ़ता है तथा इनके जरिए संवेदनाओं का संप्रेषण भी अत्यन्त प्रभावशाली बनता है। मार्कण्डेय भाषा के कलात्मक तत्त्वों के प्रति आग्रही न होकर भी अपनी कहानियों में बिंब, प्रतीक, अलंकार आदि का सुन्दर-स्वाभाविक प्रयोग किया है। उनकी कहानियों के कलात्मक पक्ष के संबद्ध में महेन्द्रनाथ पांडेय का कहना है कि “मार्कण्डेय ने अभिव्यक्ति के लिए ग्रामीण प्रतीकों का अत्यंत वैविध्यपूर्ण किंतु स्वाभाविक प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में प्रतीकों और बिंबों की

---

1. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 84

2. वही - पृ. 90

3. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 202

4. वही - पृ. 281

5. वही - पृ. 311

भरमार है। बिंब और प्रतीकों की बहुलता के कारण मार्कण्डेय की कहानियों का शिल्प कविता के निकट जान पड़ता है।”<sup>1</sup> मार्कण्डेय के कथासाहित्य में इन सबकी सहज अभिव्यक्ति पायी जाती हैं।

### 5.7.1 अलंकार

आलंकारिता भाषा के कलात्मक सौन्दर्य को बढ़ाता है। ‘चाँद का टुकड़ा’ कहानी में प्रस्तुत आलंकारिक भाषा का एक उदाहरण -“तेल में डूबे, खुले हुए, वैसे ही लम्बे बाल, वैसे ही चाँद के टुकड़े सा मुखड़ा, वैसी ही कटहल के काये की तरह बडी-बडी आँखें, वैसे ही मुंदरी की तरह की कमर और हाथी की सी मस्तानी चाल।”<sup>2</sup> यहाँ मार्कण्डेय ने उपमा-अलंकार का प्रयोग किया है। ‘हंसा जाई अकेला’ में प्रयुक्त उपमान देखिए - “उसके भारी चेहरे में मटर सी आँखें, और आलु सी नाक, उसके व्यक्तित्व के विस्तार को बहुत सीमित कर देती है। सीने पर उगे हुए बाल, किसी भीट पर उगी हुई घास का बोध कराते हैं।”<sup>3</sup> ‘अग्निबीज’ उपन्यास में बजमा पोखरी का वर्णन अलंकार से लैस है - “सावन के महीने में निर्मल आसमान में जिधर देखो, तारे ही तारे छाये थे और चतुर्थी का चाँद पेडों की झुरमुट से खिसककर बाहर आ रहा था। बजमा का रूपहला आँचला जैसे रत्नों से भर गया हो।”<sup>4</sup> उपमा अलंकार लेखक के लिए विशेष प्रिय रहा है। उनकी भाषा में

- 
1. महेंद्रनाथ पांडेय - आजकल, अंक जून 1983 - पृ. 12
  2. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 224
  3. वही - पृ. 211
  4. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 20



उपमानों का प्रयोग पात्रों के शारीरिक अंगों तथा प्रकृति के वर्णन में पर्याप्त मात्रा में हुआ है।

### 5.7.2 प्रतीक

विशिष्ट अर्थ संदर्भ को व्यंजित करने के लिए भाषा में प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। प्रतीक के जरिए लेखक सूक्ष्म और अमूर्त भाव को मूर्त बनाता है। भगीरथ मिश्र ने प्रतीक को परिभाषित करते हुए कहा है कि “अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कोई किसी अप्रस्तुत भाव, विचार, क्रिया-कलाप, देश, जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है तब वह प्रतीक कहलाता है।”<sup>1</sup> प्रतीक के प्रयोग द्वारा भाषा नये सांचे में ढल जाती है।

मार्कण्डेय के प्रतीक ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र से संबद्ध होता है जैसे बखरी, पोखरी, सोहगइला आदि। “मार्कण्डेय ने अभिव्यक्ति के लिए ग्रामीण प्रतीकों का अत्यंत वैविध्यपूर्ण किंतु स्वाभाविक प्रयोग किया है।”<sup>2</sup> मार्कण्डेय की कहानियों के ज्यादातर पात्र किसी न किसी रूप में प्रतीकात्मक है। ‘हंसा जाई अकेला’ का हंसा स्वातंत्र्योत्तर भारत के निराशाजनक व्यक्ति का प्रतीक है। ‘कल्याणमन’ कहानी की नायिका मंगी गाँव के ठाकुर द्वारा शोषित सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है।

---

1. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र - पृ. 263

2. महेंद्रनाथ पांडेय - आजकल जून 1983 - पृ. 12

‘सोहगइला’ कहानी का सोहगइला यानी सिंदूर की डिबिया सड़ी-गली पुरातन रूढ़ परंपरा का प्रतीक है। मधुरेश के मुताबिक प्रस्तुत कहानी का भरा हुआ पानी का लोटा भौतिक ज़रूरतों की पूर्ति का प्रतीक है - “...हाथ में बंधे सोहगइला की चिंता उसके लिए खत्म हो जाती है और भरा हुआ पानी का लोटा तात्कालिक भौतिक ज़रूरतों की पूर्ति का प्रतीक बन जाता है।”<sup>1</sup> ‘कल्यानमन’ कहानी में मंगी की झोंपड़ी में खाट के नीचे ‘फन काढ़े बैठा सांप’ एक प्रतीक है जो मंगी का कल्यानमन तालाब पर आँख लगाये बैठे ठाकुर का प्रतीक है। ‘प्रलय और मनुष्य’ मार्कण्डेय की प्रतीकात्मक कहानी है “वसन्ता और मुरली मनुष्य की अजेय शक्ति और विश्वास के प्रतीक ही नहीं, श्रमिक और शोषित वर्ग की शक्ति के प्रतीक है और धारा, मछलियाँ, मेंढक, पंडित शोषक वर्ग है।”<sup>2</sup> ‘आदर्श कुक्कुट गृह’ नामक कहानी में कुक्कुट गृह के उद्घाटन समारोह के बाद वहाँ के सारे के सारे मुर्ग-मुर्गियों को साहब की चपरासी पकड़कर ले जाता है। इस दृश्य को रमजान अपने टूटे चश्मे से देखता है - “चपरासी ले लपक कर एक मुर्गे की गरदन पकड़ी, ...रमजान उठ खड़ा हुआ। उसने अपने टूटे चश्मे को हाथ से हिलाया, नीचे-ऊपर किया।”<sup>3</sup> यहाँ पर ‘टूटे-चश्मे’ मोहभंग का प्रतीक बनता है। मार्कण्डेय ने ऐसे अनेक प्रतीकों द्वारा गाँव में व्याप्त अंधविश्वास, परंपरागत रूढ़ि, शोषण आदि का चित्रण किया है।

---

1. वागर्थ मई 2005 - पृ. 73

2. चन्द्रशेखर - आंचलिक हिन्दी कहानी - पृ. 83

3. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 237

### 5.7.3 बिम्ब

बिम्ब के प्रयोग से रचना में दृश्यात्मकता आती है। यह एक प्रकार का शब्द चित्र होता है जो पाठकों के मन में भावों को जगाने में सहायक बनता है। बिंबों द्वारा लेखक किसी वस्तु, घटना तथा विचार को गोचर रूप में संप्रेषणीय बनाता है। “बिम्ब योजना अत्यन्त विशद होती है - बिम्ब पूरे लम्बे पैराग्राफ में प्रस्तुत किया जाता है और उपमान तथा उपमेय का सादृश्य विस्तार पूर्वक दिखाया जाता है। दोनों परिस्थितियों में पाठक उसको विशिष्ट अर्थ सम्पन्न और साभिप्राय समझ बिम्ब की अर्थवत्ता समझने का प्रयास करता है।”<sup>1</sup>

मार्कण्डेय के बिंबविधान में सजीवता एवं स्पष्टता है। ‘दाना भूसा’ नामक कहानी में अंकित अकाल के वातावरण का बिंब देखिए - “घर चारों और ऐसा चिकना, साफ-सूफ की लगता है, कई दिन पहले लीप पोत कर छेड़ दिया गया हो या चौका-बासन करके घर के प्राणी हफ्तों पहले कहीं चले गये हों। चारों और सघन शांति, सिर्फ एक बूढ़ी बिल्ली, जिसके पेट-पीठ सट कर एक हो रहे हैं। पूँछ नीचे किये इधर-उधर रोती हुई धूम रही थी। पहले जो गौरेयों का झुंड उतर कर बार-बार राजी का सुखवन खाया करता था और उड़ाने पर फुर से उड़ कर बखरी की खपरैल पर गुथ जाया करता था, जाने किस देश चले गये। दो दिन से एक नन्हीं सी गौरेया का बच्चा आँगन में उतर कर चूँ-चूँ करता और उड़ जाता था, पर आज वह भी कहीं दिखाई नहीं पड़ता। नाबदान के बगल की ऊँची डेहरी, जो

---

1. शान्तिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प - पृ. 180

उबसन और राख से सनी सनी रहती थी, एकदम धुली और साफ पडी थी।”<sup>1</sup> इस बिंब के द्वारा मार्कण्डेय ने अकाल के परिस्थिति में उभरी गरीबी का यथार्थ अंकन किया है। ‘शवसाधना’ नामक कहानी से पात्रों के बिंबात्मक अंकन का एक सुन्दर उदाहरण देखिए - “बाबा ने सुखी को पहली बार देखा था काली भुजंग, बडी-बडी आँखोंवाली, सलोनी तिरिया, घुरहरा, धनुष की तरह लचीला बंदन, साँप की तरह चिकनाई....।”<sup>2</sup>

‘अग्निबीज’ उपन्यास में मार्कण्डेय ने श्यामा की शादी के संदर्भ में लड़की परायी घर की हो जाती है, इस तथ्य को सुन्दर बिम्ब में रूपायित किया है - “आँगन के पुष्प बिरवे की तरह शोभाशील होने पर भी पुष्पित होते हैं। वह उस सुगन्ध की भाँति हो जाती है जो एक न एक दिन पवन बेग से उड़कर कहाँ की कहाँ जा पडती है।”<sup>3</sup> इस प्रकार मार्कण्डेय जी की भाषा में बिंबों के सफल प्रयोग से पात्र एवं वातावरण आकर्षक बन गए हैं।

## 5.8 काव्य का प्रयोग

मार्कण्डेय कथाकार होने के साथ कवि भी है। कविताओं के प्रति उनका लगाव कथा साहित्य में भी द्रष्टव्य है। उन्होंने अपने कथासाहित्य में कहीं-कहीं पात्रों के मनोभावों के पूर्ण संप्रेषण के लिए कविता या गीतों का प्रयोग किया है।

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 317

2. वही - पृ. 290

‘हंसा जाई अकेला’ में मार्कण्डेय ने कविता के मार्मिक प्रयोग से हंसा का अकेलापन और मोहभंग को साकार बना दिया है।

“हंसा जाई अकेला, ई देहिया ना रही  
मल ले, धो ले, नहा ले, खा ले  
करना हे सो कर ले,  
ई देहिया...”<sup>1</sup>

कहानी में बीच-बीच दूर से कभी धान के खेतों से, कभी ईख और मकई के खेतों की मेड़ों से ‘हंसा जाई अकेला...’ वाला गाना गूँज उठता है। हंसा के दुख-दर्द को तथा परिवेश को पूरी सजीवता के साथ उभारने में प्रस्तुत कविता सहायक सिद्ध हुई है।

‘अग्निबीज’ उपन्यास में श्यामा की शादी के मौके पर आँगन से उठनेवाली गीत में दर्द है। इसमें लड़की के लिए अपना घर पराया होने की दुख है।

-“आटन छोड़लूँ, मैं पाटन छोड़लूँ,  
छोड़लूँ मयरिया की गोद  
एहि सेंधुरा के कारण बाबा  
छोड़लूँ मैं देस तिहारा।”<sup>2</sup>

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 217  
2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 169

इस दर्द-भरी गीत के जरिए मार्कण्डेय ने पाठक के मन को द्रवित करने में सफल हुए हैं। उनके कथा साहित्य में वातावरण तथा व्यक्ति के मानसिक स्थिति को मुखर करने के लिए काव्य का सफल प्रयोग किया गया है।

### 5.9 मार्कण्डेय के कथा साहित्य की शैली

जिस ढंग से विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है उसे शैली कहते हैं। 'हिन्दी साहित्य कोश' के अनुसार - "शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषय-वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।"<sup>1</sup> शैली के द्वारा साहित्यकार अपनी कृति को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। बाबू गुलाबराय के मतानुसार "शैली का संबन्ध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् सब तत्वों से हैं और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है। कला की प्रेषणीयता अर्थात् दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर रहती है। किसी बात को कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते हैं। इसका संबन्ध केवल शब्दों से ही नहीं वरन् विचार और भावों से भी है।"<sup>2</sup>

मार्कण्डेय ने कभी एक कहानी के लिए एक खास शैली का प्रयोग किया है तो कभी किसी कहानी में कई शक्तियों का प्रयोग किया है। "आँचलिक उपन्यासों में प्रमुखतः दो शैलियों का प्रयोग दिखाई देते हैं। विचारात्मक या यथार्थवादी और

---

1. धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश भाग 1 - पृ. 681

2. बाबू गुलाबराय - काव्य के रूप - पृ. 225

दूसरा भावात्मक। सामान्यतः विचारात्मक या यथार्थवादी शैली विवरणात्मक एवं व्यंग्यात्मक होती है और भावात्मक शैली आलंकारिक एवं चित्रोपम होती है।”<sup>1</sup> ये विशेषताएँ ज़रूर मार्कण्डेय के कथा साहित्य में दिखायी देती हैं। उन्होंने कई शैलियों के ज़रिए अपनी रचना में आंचलिकता को बनाई रखने की कोशिश की है।

### 5.9.1 वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली में साहित्यकार एक सर्वज्ञ की तरह घटनाओं और पात्रों का वर्णन करता है। कथानक की यह शैली सर्वाधिक प्रचलित है क्योंकि यह सरल होती है तथा इसमें लेखक को जीवन का व्यापक धरातल प्रस्तुत करने का मौका मिलता है।

मार्कण्डेय ने छोटी और बड़ी मात्रा में हर कहानी और उपन्यास में इस शैली का प्रयोग किया है। उनकी कहानी ‘दौने की पत्तियाँ’ में प्रयुक्त वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण - “एक ओर सागभाजी का कोइरार और दूसरी ओर एक झोपड़ी। उसके आगे एक छोटा सा आँगन। आँगन के चारों ओर एक चौड़ी मोड़, जिसकी नाली में मर्सा, मकोय, तुलसी और दौने से लेकर, वैजंती, रातरानी और गुलदावदी के पौधे लहलहाते रहते हैं।”<sup>2</sup> यहाँ मार्कण्डेय ने अपनी वर्णन क्षमता के ज़रिए पाठकों के सामने एक झोपड़ी और उसका आस-पास का सजीव चित्र खींचा है।

---

1. नगीना जैन - आंचलिकता और हिन्दी उपन्यास - पृ. 50

2. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 199

‘अग्निबीज’ उपन्यास में बरसात के एक दिन का अंकन मार्कण्डेय ने वर्णनात्मक शैली के प्रयोग से काफी प्रभावमयी बना दिया है - “सुबह जब रामपुर के लड़के इधर से आये थे, तो पानी घुटने भर था। श्यामा ने धोती थोडा ऊपर घिसका कर, बजमा के चढे हुए पानी को पार कर लिया था। छोटों ने अपनी जाँघिया उतार कर सिर पर रख ली थी और बडे धोतियाँ घुटनों के ऊपर चढा कर पार उतर आये थे। कुछ तो बडी देर तक उसी में छपकोरिया खेलते रहे थे और एक-दूसरे पर पानी का छींटा मारने में उन्होंने अपनी किताब - काँपी भी भिगो दी थी।”<sup>1</sup>

‘कल्यानमन’ कहानी का तालाब का वर्णन, ‘हंसा जाई अकेला’ का चुनाव की परिस्थिति, ‘प्रलय और मनुष्य’ का प्रलय, ‘माई’ का रज्जू का गाँव में आगमन आदि प्रसंग मार्कण्डेय की वर्णन-क्षमता का परिचय देता है।

### 5.9.2 विश्लेषणात्मक शैली

विश्लेषणात्मक शैली में कहानी के पात्र, घटना, वातावरण आदि के वैचारिक स्तर पर विवेचन-विश्लेषण तथा व्याख्या होती है। मार्कण्डेय की कहानियों में इस शैली का सफलतम प्रयोग हुआ है। उत्तराधिकारी कहानी से प्रस्तुत शैली का एक उदाहरण यों है - “तुम शायद नहीं जानते कि हमारे यहाँ प्यार की कोई परिभाषा नहीं है। कम से कम मेरे घर में - हमने बचपन से ही आदमी को जानवर

---

1. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 16



की तरह कामुकता का व्यवहार करते देखा है। जैसे यह कोई जिम्मेदारी नहीं, एक ऐसी क्रिया है जो बिना किसी विचार के चलती रहती है।”<sup>1</sup> ‘अग्निबीज’ उपन्यास से विचारात्मक शैली का एक प्रयोग - “अब वह समय नहीं रहा जब आप सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल कर, सिर्फ चरखे के सहारे गाँधीवाद को बचा लेंगे। परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। देश पर हमारी विचारधारा के लोगों का शासन है और देश में पनपने-वाले अनेक विचार हमारे हाथ से राजशक्ति छीन लेना चाहते हैं। लड़ाई का मुद्दा बदल गया है। आज के संसार में राजशक्ति की रीढ़ कोई न कोई विचारधारा ही है।”<sup>2</sup> इस प्रकार विश्लेषणात्मक पद्धति के जरिए मार्कण्डेय पाठक को सोचने के लिए मजबूर बनाता है।

### 5.9.3 संकेतात्मक शैली

संकेत के रूप में या अल्प शब्दों में कुछ कहकर भी कभी-कभी बहुत कुछ कह दिया जाता है, कथानक की इस शैली को संकेतात्मक शैली कहता है। उनकी ‘हंसा जाई अकेला’ से एक उदाहरण प्रस्तुत है - “घर की अंधेरी भंडरिया। दोनों भटकते हैं। हंसा कुछ बताता है। सुशीला जी कुछ सुनती हैं। आँख कुछ देखती है। हाथ कुछ टटोलते हैं। ...कभी वह लुढ़कता है, कभी वह लुढ़कती हैं और दोनों दृष्टिवान हो जाते हैं - दिव्यदृष्टिवान।”<sup>3</sup> यहाँ अंधेरे में टटोलते हंसा

- 
1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 300
  2. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 95
  3. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 216

और सुशीला के परस्पर आकर्षण को कम शब्दों में दर्शाया गया है। फिर भी इसके अर्थ-विस्तार में कोई बाधा नहीं होती। बल्कि वह प्रभावशाली हो उठी है।

#### 5.9.4 संवादात्मक शैली

पात्रों के आपसी बातचीत के माध्यम से कथा और चरित्र को प्रस्तुत करना संवेदात्मक शैली है। संवाद के प्रयोग से कहानी में सजीवता तथा विश्वसनीयता का समावेश हो जाता है। संवेदात्मक शैली मार्कण्डेय के लिए वाकई प्रिय रही है। उन्होंने अपने लगभग सभी कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है। 'बातचीत' कहानी में मुख्य रूप से केवल संवादों पर ही आधारित है। उनकी 'बिन्दी' नामक कहानी से संवादात्मकता का एक उदाहरण-

“कवर रे, बिन्दी बिटिया, परसा कहाँ है?”

“आज मुकदिमा है न दादा, कस्बा गये हैं।”

“कइसा मुकदिमा रे।” गेदसिंह कंधे से गमछा उतर कर खूँट से सुर्ती खोलने लगे।

“पंचाइत से पचास रुपया जरिमाना हुआ है बाबा।”

“अच्छा, अच्छा, समझ गया, अरे यह जरिमाना है बेचिया की अनरथ की जड़ है। न धरम रह गया, न न्याय इस लोक में। बस पाल्टीबाजी...।”<sup>1</sup>

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 280

यहाँ मार्कण्डेय ने गाँव के अशिक्षित आदमी की बोलचाल के अनुकूल संवाद का प्रयोग किया है। इस तरह की संवाद से कहानी में सहजता आती है साथ ही कथ्य को आगे बढ़ने में भी मदद मिलती है।

### 5.9.5 पूर्व-दीप्ति शैली

यादों से बचना व्यक्ति के लिए मुश्किल होता है। कभी-कभी उसका मन विवश होकर अतीत की स्मृतियों की ओर चलता है। ऐसी स्थिति में उससे संबन्धित अतीत की घटना को लेखक प्रस्तुत करते हैं और इससे कथानक का विकास होता है। सामान्यतः इस शैली में कथ्य का आरंभ वर्तमान से होता है और आगे चलकर किसी पात्र की यादों में अतीत के जीवन की कथा प्रस्तुत की जाती है। 'बिन्दी' कहानी के अतीत स्मरण का चित्रण देखिए - “गजराज की एक-एक बातें बिन्दी को याद आने लगीं। पाँच बरस पहले का चंद्रग्रहण, बूढ़ी दादी और गजराज, कितनी लगन से वह दादी की सेवा करता था। किस-किस तरह इक्के-रिक्के पर लाद-फाँद कर वह हम लोगों को ले गया था।”<sup>1</sup>

‘अग्निबीज’ उपन्यास के कई जगहों पर मार्कण्डेय ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है, जो वर्तमान की घटनाओं को प्रवाहमय बनाया है। ‘अग्निबीज’ उपन्यास से एक उदाहरण - “भाइजी का ध्यान फिर जहाँ का तहाँ लौट गया। आश्रम के उद्घाटन वाली सभा का मंडप उनकी आँखों के सामने उभर आया।

---

1. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 280

यहीं कहीं तो, शायद हाँ, वहाँ, आगे है वह जगह। मैंने जान-बूझकर इस क्षेत्र के सारे हरिजनों को घर जा-जा कर उस उद्घाटन सभा में बुलाया था। बहुत से पढ़ने वाले लड़के, शिक्षक और बनारस के कमल भाई उस सभा में उपस्थित थे।”<sup>1</sup>

### 5.9.6 किस्सागोई शैली

गाँव में अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। इन लोककथाओं को कहने का एक खास अंदाज होता है, इस शैली को किस्सागोई कहा जाता है। ‘बातचीत’ कहानी में किस्सागोई शैली का प्रयोग किया गया है - “जग्गी का बाप चोर था और गयादीन ठाकुर के बाप से उसकी दाँत काटी रोटी की दोस्ती थी। क्या शरीर दी थी भगवान ने उसे कि घोड़े को भी पीछे छोड़ जाए। घर की साधारण दीवारों को तो वह चौपाल में कूढ़ जाता। एक-एक रात में हज़ारों का सेना-चाँदी ला देना, ठाकुर के एक इशारे पर किसी को बना बिगाड देना उसके बायें हाथ का काम था।”<sup>2</sup> इस तरह की अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन किस्सागोई शैली की खासियत है।

### 5.9.7 फंतासी शैली

मार्कण्डेय की रचनाओं में इस शैली का भी सफलतम प्रयोग हुआ है। फैंटसी शैली में असंभव बात को संभव बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। “फंतासी अतिरंजित कल्पना के द्वारा कहानी की कथा घटनाक्रम को एक कल्पना-लोक में

---

1. मार्कण्डेय - अग्निबीज - पृ. 14

2. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 206

प्रक्षेपित कर वर्तमान जीवन की विसंगतियों में प्रत्येक स्तर पर परिव्याप्त अव्यवस्थगत भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती हुई पाठक को जागरूक बनाती है।”<sup>1</sup> मार्कण्डेय की ‘प्रलय और मनुष्य’ नामक कहानी फंतासी के आधार पर लिखी गई है। उन्होंने कहानी में प्रलयकारी बाढ़ में मेंढकी, चेलहवा, घोंघी और जोंक आदि जलचर जीवियों की माया लोक की सृष्टि की है। वे मनुष्य की व्यंगात्मक विचार-विमर्श करते हैं - “इसी समय भाषा-शास्त्री मेढक का आविर्भाव हुआ। मेझुकी मारे लाज के वहीं पानी में गड़ गयी। धार मुसकुरा कर रह गयी। मेढक बोल उठा, “सहसा बहुधा पर आपका प्रताप छ़ा गया है, महारानी जी! आदमी अपनी भाषा खो चुका है। उसकी बोली स्वयं वही नहीं समझता। उसकी बीबी, उसके बच्चे, सब जैसे अर्थहीन भाषा बोल रहे हैं। उसे कोई नहीं सुनता। वह देखिए, आपके इशारे पर लहरें ऊपर चढ गयीं।”<sup>2</sup>

### 5.9.8 चित्रात्मक शैली

चित्रात्मक शैली आंचलिक साहित्य की खासियत होती है। आंचलिकता को बनाये रखने के लिए स्थानीय रंग तथा प्राकृतिक दृश्यों का अंकन ज़रूरी होता है। ज्यादातर परिवेश को साकार बनाने के लिए चित्रात्मक शैली का प्रयोग करता है। उनकी ‘महुए का पेड़’ में मार्कण्डेय ने चित्रात्मक शैली को बखूबी से प्रयोग किया है - “रात को जब उजली, धुली चाँदनी की चादर, धरती पर फैल जाती और

---

1. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य - पृ. 379

2. मार्कण्डेय - मार्कण्डेय की कहानियाँ - पृ. 230

उस विशाल महुए की नंगी-नंगी डालें और उनमें से निकली हुई नन्हीं-नन्हीं, बिना पत्ते की टहनियों के झोपों से एक-एक फूल टपकता, तो दुखना को लगता, जैसे रेशम की पतली धारियों से स्वर्ग के दूत, उसके आगे मोतियों की वर्ष कर रहे हों। वह एकटक, बहुत ही प्यासी आँखें से देखती-देखती देर तक अपनी मडई के आगे बैठी रहती है।”<sup>1</sup> चित्रात्मक शैली ज्यादा दृश्यात्मक होता है। इसमें लेखक रेखाचित्रों के जरिए तथ्य को ज्यादा रोचक और आकर्षक बनाता है।

इस तरह की अनेक शैलियों से मार्कण्डेय का कथा-साहित्य संपन्न है। उन्होंने परंपरागत तथा आधुनिक शैलियों के जरिए अपने कथा साहित्य को काफी प्रभावशील बना दिया है।

### निष्कर्ष

स्थानीय बोली, मुहावरे, लोकोक्ति, लोक-गीत आदि के प्रयोग आंचलिक साहित्य की सर्जनात्मक अनिवार्यता है। दरअसल इसके जरिए ही लेखक स्थान विशेष का वातावरण एवं वहाँ के जन-जीवन को पूरी सहजता के साथ अभिव्यक्ति कर पायेंगा। मार्कण्डेय के कथा साहित्य इन खासियतों को लेकर चलती है ताकि आंचलिकता को अपने कथासाहित्य में बनाये रख सकें। उनकी रचनाओं की भाषा सरल, सुबोध, सहज और संप्रेषणीय है। ग्रामीण शब्दावली, मुहावरे, बिंब, प्रतीक,

लोकगीत आदि के अनुरूप प्रयोग से कथ्य में जीवंतता आ गई है। शिल्प के आग्रही न होकर भी उन्होंने अपने कथासाहित्य के कलात्मक पक्ष को सशक्त बनाने का प्रयास अवश्य किया है।

